Mahatma Gandhi Shati Smarak Mahavidyalaya

Garua Maksoodpur, Ghazipur

Department of Sanskrit

विषय - संस्कृत (स्नातक स्तर)

Programme Outcomes (POs)

(1) विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।

(2) सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत पारंगता प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।

(3) आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे।

(4) नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।

Programme Specific Outcomes (PSOs)

(1) सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्त्व एवं उसकी वर्तमान प्राथमिकता को जानने समझने योग्य होंगे ।

(2) संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं गद्य, पद्य ,नाटक, व्याकरण इत्यादि से सुपरिचित होकर संस्कृत मर्मज्ञ बन सकेंगे।

(3) संस्कृत व्याकरण के विभिन्न अंगों के ज्ञान द्वारा भाषा के शुद्ध अध्ययन, लेखन एवं उच्चारण माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

(4) आयुर्वेद, वास्तु शास्त्र, ज्योतिष, कर्मकांड के माध्यम से जीविकोपार्जन के योग्य बनेंगे।

(5) वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य की समृद्धि में निहित नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीय संस्कृति के महत्व को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने में सक्षम होंगे।

(6) धर्म, दर्शन, आचार- व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्व को जानकर उत्तम चरित्रवान मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगे।

(7) समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत साहित्य में निबंध एवं सर्वांगीणता के प्रति शोध परक दृष्टि का विकास होगा।

बीए प्रथम वर्ष अधिगम उपलब्धि (Course Outcomes)

(1) विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भागों से परिचित हो सकेंगे ।

(2) संस्कृत पद्म साहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्य बोध कर सकेंगे।

(3) संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त रस, छंद और अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।

(4) संस्कृत साहित्य में निहित शक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।

(5) विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ-साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे।

(6) संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से परिचित हो सकेंगे।

(7) संस्कृत वर्णो के उच्चारण कौशल का विकास होगा।

(8) संधियों के मूल भेदों को समझ कर उनके विशिष्ट ज्ञान एवं अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

(9) राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगे ।

(10) अनुवाद कौशल में वृद्धि होगी।

(11) संस्कृत गद्य के धारा प्रवाह एवं शुद्ध वाचन का कौशल विकसित होगा ।

(12) विद्यार्थी संगणक का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर, अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग कर सकने में सक्षम होगें।

(13) ई -कंटेंट एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग कर पाने में समर्थ होंगे।

(14) संस्कृत भाषा और साहित्य में नूतन अन्वेषण करने तथा अपने ज्ञान कोष में वृद्धि कर पाने के योग्य होंगे।

(15) संगणक के प्रयोग से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार, आदान-प्रदान एवं पारंपरिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामंजस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।

बीए द्वितीय वर्ष अधिगम उपलब्धि (Course Outcomes)

(1) संस्कृत नाट्य साहित्य को समान रूप से समझ सकने में सक्षम होंगे ।

(2) नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे।

(3) नाटक में प्रयुक्त रस ,छंद एवं अलंकारों का सम्यक बोध कर संवाद एवं अभिनय कौशल से पारंगत होंगे।

(4) नवीन पदों के ज्ञान के द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी।

(5) भारतीय सांस्कृतिक तत्वों एवं मूल्यों को आत्मसात कर भारतीयता के गर्व से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगे ।

(6) व्याकरण शास्त्र के ज्ञान से सूत्र, वाक्य विन्यास कौशल एवं शब्दों की सिद्धि प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।

(7) विद्यार्थी काव्य शास्त्र के उद्भव और विकास से परिचित होकर काव्यशास्त्रीय तत्वों को समझने में सक्षम होंगे।

(8) कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा ।

(9) विद्यार्थियों में निबंध, संस्कृत पत्र लेखन तथा अनुच्छेद लेखन क्षमता का विकास होगा।

(10) अपठित अंश के माध्यम से विषय वस्तु का अवबोध एवं अभिव्यक्तिकौशल विकसित होगा ।

बीए तृतीय वर्ष अधिगम उपलब्धि (Course Outcomes)

(1) वैदिक वांग्मय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।

(2) वैदिक एवं औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा।

(3) वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।

(4) उपनिषद का सामान्य परिचय तथा संयम, भक्ति एवं त्याग मूलक संस्कृति से परिचित होंगे।

(5) भारतीय दार्शनिक तत्वों का सामान्य ज्ञान, दार्शनिक तत्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।

(6) गीता ज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

(7) भाषा विज्ञान के उद्भव एवं विकास, उसकी उपयोगिता एवं महत्व से सुपरिचित होंगे।

(8) ध्वनि के प्रारंभिक एवं वर्तमान स्वरूप एवं ध्वनि परिवर्तन के कारणों के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित होगी।

(9) पदों की सिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से शब्द निर्माण की वैज्ञानिकता से परिचित होंगे।

(10) आधुनिक संस्कृत साहित्य के कवियों एवं बाल साहित्य से परिचित होते हुए संस्कृत शिक्षण की सरलतम विधि के प्रति उन्मुख होंगे।

(11) आधुनिक संस्कृत साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याण परक तथ्यों से आत्मोन्नति की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।

(12) नवीन बिम्बविधानो एवं नवीन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(13) भारतीय योग शास्त्र के मूलभूत सिद्धांत, प्राचीनता एवं वैज्ञानिक ज्ञान की महत्ता से परिचित होंगे।

(14) योग के वास्तविक स्वरूप के द्वारा योग को जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित होंगे।

(15) योग के आसनों के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों को समान रूप से सीख सकेंगे।

(16) योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे।

(17) आयुर्वेद का सामान्य ज्ञान तथा मानव स्वास्थ्य एवं रोग निवारण हेतु मूलभूत सिद्धांतों से परिचित होंगे।

(18) वर्तमान समय में आयुर्वेद की आवश्यकता एवं महत्व से अवगत होते हुए अष्टांग आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा स्वस्थ जीवन शैली अपनाने हेतु अग्रसर होंगे।

(19) भारतीय वास्तु शास्त्र का सामान्य परिचय ,महत्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित होंगे ।

(20) वास्तु शास्त्र के मूल सिद्धांतों के ज्ञान द्वारा उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा ।

(21) भारतीय प्राचीन ज्ञान ज्योतिष शास्त्र का सामान्य ज्ञान और विभिन्न सिद्धांतों के ज्ञान के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जागृत होगी ।

(22) पंचांग अवलोकन एवं निर्माण कौशल का विकास होगा ।

(23) विद्यार्थी भारतीय पारंपरिक कर्मकांड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होंगे।

(24) नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान विधि को जानकर जीवन को नियम बद्ध एवं आचरणशील बनाने में समर्थ होंगे।

(25) भारतीय कर्मकांड के प्रमाणित शास्त्रीय रूप से परिचित होकर उसकी व्यवहारिक उपयोगिता जानने योग्य बनेंगे।

(26) सामान्य अनुष्ठान संपन्न कराने योग्य कुशल और पौरोहित्य कर्म विशारद बनेंगे।

(27) आत्म निर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।